पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 27, अंक 258 अप्रैल 2025

जय भीम

जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाता है।

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 27 अंक 258
अप्रैल 2025

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन	डॉ. संगीता तिवारी	4
3	दलित साहित्य की प्रतिनिधि आत्मकथा 'जूठन'	धर्मवीर (शोधार्थी)	6
4	अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजित बुद्धिमता : एक अध्ययन	किरन आर्या (शोधार्थी) डॉ. रेनू रावत	8
5	दलित विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित समावेशी नीतियाँ	डॉ. मृदुला शर्मा	11
6	भारत में जातिगत असमानता की आधुनिक मनोवृत्ति	डॉ. महेश जगोठा डॉ. राकेश लाल शाह	13
7	Buddhism and Business Management	- Professor Mukesh Ranga	16
8	Matrix of Self-Assertion : Aesthetic Expressions of Dalit Women Poets	- Dr. Utpal Rakshit	20
9	The Impact of Artificial Intelligence on the Mental Health of Secondary School Students : A Comprehensive Review	- Dr. Swati Srivastava	25

UGC Care Listed Journal
खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलितों के मसीहा, संविधान शिल्पी, समाज वैज्ञानिक, शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक आदि अनेक रूपों में जाने जाते हैं। सामाजिक न्याय पर आधारित आधुनिक भारत के निर्माता भी है।

सामाजिक न्याय की स्थापना उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य था। यदि यह कहा जाय कि वे आधुनिक भारत में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे तत्कालीन व आज भी समाज में व्याप्त भेदभाव, शोषण, अन्याय, अत्याचार व उत्पीड़न के विरुद्ध जीवन पर्यन्त संघर्ष करते रहे। उनके जीवन और उनके संघर्ष का लेखा–जोखा भारत में सामाजिक न्याय की स्थापना के लिये किया गया संघर्ष इतिहास का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। वे स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व को सामाजिक न्याय का पर्याय मानते थे। अंतः उनकी दृष्टि में समाज में इनका अभाव सामाजिक अन्याय का द्योतक है। जीवन पर्यन्त जातीय उत्पीड़न, अन्याय, शोषण व भेदभाव से उत्पीड़ित डॉ. अम्बेडकर परम्परागत भारतीय समाज में विद्यमान अन्याय की प्रकृति और उसके कारणों की व्याख्या उपरांत जिस निष्कर्ष पर पहुंचे वे हैं :–

- हिन्दू वैचारिकी, हिन्दू विधान एवं हिन्दू समाज ने व्यक्ति के महत्व को स्वीकार नहीं किया है वरन् इसने वर्ण, जाति को महत्व दिया है, व्यक्ति की अवहेलना की है।
- हिन्दू समाज में सामाजिक न्याय का अभाव है क्योंकि इसका विधान समानता, स्वतंत्रता एवं भाईचारे का निषेध करता है। यह असमानता, दासता और वर्ण जाति भेद पर बल देता है।
- हिन्दू विधान लौकिक नहीं ईश्वरीय है। इसलिये इसमें परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है।

सामाजिक न्याय की स्थापना के प्रयास में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने सबसे पहले इन कमियों को दूर करने पर ध्यान दिया। उनका मानना था कि न्यायपूर्ण व्यवस्था न्यायपूर्ण विधान के बिना स्थापित नहीं हो सकती। संविधान के द्वारा उन्होंने न्यायपूर्ण व्यवस्था की आधारशिला रखी जिसके तहत एक तो उन्होंने व्यक्ति की गरिमा की रक्षा के लिये आवश्यक उपबन्ध किये और दूसरे जिन वर्गों के साथ सदियों से अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न, शोषण होता रहा है उनकी निर्योग्यताओं को दूर किया।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर धर्म की आवश्यकता और महत्व को भली–भांति समझते थे किंतु वे लौकिक आचार को धार्मिक विषय नहीं बनाना चाहते थे। उनका मानना था कि विश्व के लगभग सभी धर्म कम या अधिक मात्रा में सम्प्रदाय हैं वास्तविक धर्म नहीं। इतिहास साक्षी है कि जहाँ व जब कभी समाज पर धर्म का नियंत्रण रहा, सामाजिक न्याय का अभाव रहा। इसलिये उन्होंने स्वतंत्र भारत को धार्मिक राष्ट्र होने के स्थान पर धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बनाये जाने के मत का समर्थन किया। धार्मिक वर्चस्व समाप्त होने से ही सामाजिक न्याय पर आधारित लौकिक विधान के प्रभावी होने की संभावना बलवती होती है।

बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के विचार अकाट्य व दूरदर्शी हैं। प्रसन्नता की बात है कि आज डॉ. अम्बेडकर को लेकर देश में जो राजनीतिक वातावरण तेज हो रहा है उससे दलित–वंचित–शोषित और पीड़ित अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक और महिलाओं के सकल मनोरथ पूरे होंगे तथा संविधान के उद्देश्यों को पूरा करने में न्याय पालिका, विधायिका व कार्यपालिका को सक्रिय और जवाबदेह बनना पड़ेगा, क्योंकि वर्तमान में जो परिस्थितियाँ परिलक्षित हो रही है उसके पीछे मूल में कहीं डॉ. अम्बेडकर का संविधान और लोकतंत्र का जनादेश ही काम कर रहा है।

संविधान में प्रस्तावित नागरिक अधिकारों की अवधारणा का प्रतिपादन भी यही तो कहता है कि–'सबका साथ, सबका विकास' भारत के लोकतंत्र की मजबूरी है, क्योंकि डॉ. अम्बेडकर ने जाति, धर्म, रंगभेद, नस्लभेद और सभी प्रकार के भेद–विभेद की तानाशाही और राष्ट्र तथा राज्य के एकाधिकारवाद को 'एक व्यक्ति एक वोट' के लोक अधिकार से असंभव बना दिया है। जय भीम!

डॉ. अम्बेडकर जयंति की हार्दिक शुभकामना है।

– डॉ. तारा परमार

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन

– डॉ. संगीता तिवारी

सारांश

शिक्षा द्वारा ही समाज का निर्माण संभव है शिक्षा हमारे वर्तमान को ही नहीं संवारती बल्कि हमारे भविष्य की रूपरेखा तथा दिशा को भी तय करती है एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के द्वारा राष्ट्र का निर्माण संभव है विद्याथिर्यों में आत्मविश्वास जैसे कौशल विकसित कर उसका समाज के लोगों के साथ समायोजन पूर्ण तथा सृजनात्मक रवैया भी विकसित होना चाहिए प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शोधार्थी ने ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र व छात्राओं में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन के स्तर का अध्ययन'' सर्वेक्षण विधि से किया। भोपाल जिले के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों पर यह शोध किया गया है प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–टेस्ट के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया है।

प्रस्तावना

मानव ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास सदियों से कर रहा है परंतु आज भी अंधेरे का क्षेत्रफल ज्ञान के वृत्त से बड़ा है। ज्ञान की आवश्यकता द्वारा ही नई संकल्पनाओं का उदय होता हैं और वर्षों से चली आ रही परंपराओं, नीतियों तथा प्रक्रियाओं को नई दिशा देने की जरूरत प्रतीत होती है।

आत्मविश्वास एक आंतरिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है अपनी शक्ति, क्षमता एवं स्वयं की स्वीकार्यता ही आत्मविश्वास है । विद्यार्थी जीवन में आत्मविश्वास का स्थान सदा से ही महत्वपूर्ण रहा है। यह उनमें सकारात्मकता का संचार करता हैं। शैक्षिक उपलब्धि बालक के अनुभव, कौशल, सामाजिक, संज्ञानात्मक एवं शारीरिक क्रियाओं की सफलता की ओर संकेत करता है विद्यार्थी की सफलता उसके कार्य की योजना एवं उपलब्धि से लगाई जा सकती है

अध्ययन की आवश्यकता

नई राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 में विद्यार्थियों के कौशल एवं उपलब्धि पर ध्यान देने की बात कही गई है 6वीं कक्षा से ही तकनीकी, व्यवसायिक एवं कौशलयुक्त पाठ्यक्रम पर बल दिया गया है। पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन में ऐसे अध्ययन, अध्यापन प्रणाली एवं विधियों के विकास को शामिल किया है जिसके तहत पाठ्यक्रम के बोझ को कम करते हुए छात्रों में 21वीं सदी के कौशल के विकास, अनुभव आधारित शिक्षण एवं तार्किक चिंतन को प्रोत्साहित करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। एन.ई.पी. 2020 में छात्रों के सीखने की प्रगति को नियमित एवं रचनात्मक आकलन द्वारा बेहतर बनाने का प्रयास किया जाता है इसमें विश्लेषण, तार्किक क्षमता एवं सैद्धांतिक स्पष्टता के आकलन को महत्व दिया गया है।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र व छात्राओं में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र व छात्राओं में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पनाऐं

H_{01} उच्च **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं ।**

H_{02} शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं ।

न्यादर्श

भोपाल शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा नवीं के कुल 400 विद्यार्थियों; छात्र 200 व छात्राएं 200 को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

प्रदत्तों को संकलित करने हेतु प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने आत्मविश्वास का स्तर जानने के लिए रेखा गुप्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के लिए ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रपत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र व छात्राओं में आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन करने के लिए प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं की व्याख्या व विश्लेषण

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं ।

चर	संख्या विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक	निष्कर्ष
आत्मविश्वास	200	29.84	10.19	–0.46	सार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	200	78.13	7.79		

स्वतंत्र के अंश 399, सार्थकता0.05 के स्तर पर 0.098,

उपरोक्त सारणी के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध की गणना करने पर आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धिके मध्य ऋणात्मक सहसंबंध गुणांक – 0.46 पाया गया है।

स्वतंत्र अंश 399 के सारणी मान पर सार्थकता 0.05 के स्तर पर 0.098 है प्राप्त ऋणात्मक सहसंबंध का स्तर सारणी के दोनों मानों से अपेक्षाकृत कम है जिससे स्पष्ट होता है कि चरों के मध्य सार्थक एवं दृढ़ ऋणात्मक सहसंबंध है।

उच्च शासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं।

चर	संख्या विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	सहसंबंध गुणांक	निष्कर्ष
आत्मविश्वास	200	28.78	10.3	–0.45	सार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	200	76.47	7.95		

स्वतंत्र के अंश 399, सार्थकता0.05 के स्तर पर .098,

उपरोक्त सारणी के अनुसार शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध की गणना करने पर आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध गुणांक – 0.45 पाया गया है। स्वतंत्र अंश 399 के सारणी मान पर सार्थकता0.05 के स्तर पर 0.098 है प्राप्त ऋणात्मक सहसंबंध का स्तर सारणी के दोनों मानों से अपेक्षाकृत कम है जिससे स्पष्ट होता है कि चरों के मध्य सार्थक एवं दृढ़ ऋणात्मक सहसंबंध है।

निष्कर्ष

1. विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का स्तर बढ़ने पर उनमें शैक्षिक उपलब्धि का स्तर घटेगा अर्थात एक चर के बढ़ने पर दूसरे चर में कमी की पूर्ण संभावना है। परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं ।

2. शासकीय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का स्तर बढ़ने पर विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर घटेगा अर्थात एक चर के बढ़ने पर दूसरे चर में कमी की पूर्ण संभावना है। परिकल्पना शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं हैं । अतरू परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

– डॉ. संगीता तिवारी
सहायक प्राध्यापक
आई. ई. एस. शिक्षा संकाय आई.ई.एस
विश्वविद्यालय भोपाल
मोबा. 7509144255

संदर्भ :

- गोपाल कृष्णन कार्तिक 2017 स्टूडेंटस टेकल स्ट्रेस एंड बोर्ड एग्जाम दि टाइम्स ऑफ इंडिया ।
- ब्रेमस् रोड 1970 द मैनुअल ऑगड टू द अल्टीमेट स्टडी मेथड. अमेजन डिजिटल सर्विस ।
- उषा, पी. एण्ड लक्ष्मी (2008), इंफ्लूएंस ऑफ पैरेंटिंग स्टाइल एण्ड सेल्फ कान्फिडेंस ऑन मेंटल हेल्थ ऑफ सेकेंडरी स्कूल पूपिल। जर्नल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएषन फार एजुकेषन रिसर्च, (टवस 20 (1–2))

दलित साहित्य की प्रतिनिधि आत्मकथा 'जूठन'

– **धर्मवीर** (शोधार्थी)

शोध सार – दलित विमर्श में दलित आत्मकथाओं का विशिष्ट स्थान है। इनमें लेखकों ने अपने जीवन के भोगे हुए यथार्थ को प्रस्तुत किया है। दलित साहित्य जीवनवादी साहित्य होता है। इस साहित्य लेखन के केंद्र में दलित समाज और उनका प्रतिरोध है। समाज में दलितों को बुनियादी जरूरतों रोटी, कपड़ा और मकान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इन आत्मकथाओं में दलित लेखकों ने अपने तमाम कष्टों, उपेक्षाओं और यातनाओं को प्रकट किया है। दलित साहित्य डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में दलित जीवन का मर्मान्तक चित्रण किया गया है। इसमें सामाजिक विषमताओं के साथ लेखक का संघर्षपूर्ण जीवन है। दलित वर्ग के संघर्षों, कष्टों और संवेदनाओं का सजीव चित्रण वाल्मीकि जी ने किया है। इस साहित्य में वंचित, उपेक्षित, शोषित दलित जीवन के यथार्थ से साहित्यिक सृजन हुआ है।

बीज शब्द : दलित जीवन, समाज, साहित्य, शिक्षा, अस्पृश्यता, संघर्ष।

मूल आलेख : दलित साहित्याकाश के ज्योतिपुंज ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम सराहनीय हैं। इन्होंने दलित साहित्य की बुनियादी नींव को तैयार करने का कार्य किया। उनकी आत्मकथा 'जूठन' दलित साहित्य की यथार्थ और मर्मांतक अभिव्यक्ति का दस्तावेज है। सर्वप्रथम दलित साहित्य में 'दलित' शब्द की व्याख्या करना समीचीन है। दलित से तात्पर्य है कि जिसे अपने अधिकारों से वंचित रखा गया हो। 'दलित' शब्द का अर्थ है – जिसका दलन और दमन हुआ हो। दलित लेखक कंवल भारती लिखते हैं – "दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया हो। जिसे कठोर और गंदे काम करने के लिए बाध्य किया गया। वह जिसे शिक्षा से वंचित और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया हो।"[1] हिंदी में नब्बे के दशक से दलित साहित्य का आविर्भाव माना जाता हैं। दलित साहित्य का उद्भव सर्वप्रथम मराठी साहित्य में हुआ। दलित साहित्य दलित पैंथर से अस्तित्व में आया। दलित पैंथर की स्थापना 1972 में हुई। दलित साहित्य महात्मा ज्योतिबा फूले और डॉ. अम्बेडकर के विचारों से प्रेरित हुआ और दलितों में चेतना जागृत की। दलित साहित्य में सबसे लोकप्रिय विधा आत्मकथा रही है। 'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा है। जिसमें वे अपनी संघर्ष भरी जिंदगी को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। 'जूठन' में दुःख–दर्द, पीड़ा, संघर्ष का एक संसार फैला हुआ है। 'जूठन' के प्रकाशन से ही दलित साहित्य का हिंदी जगत में वास्तविक प्रारंभ हुआ। जूठन की कथा अपने आस–पास घटित घटनाओं, सामाजिक व्यवहारों, रीतियों, कुरीतियों और अंधविश्वासों की विश्वसनीय और प्रामाणिक कहानी लगती है।[2] 'जूठन' आत्मकथा को निम्नलिखित आधारों पर समझ सकते हैं–

शिक्षा व्यवस्था : 'जूठन' में पहला पड़ाव शिक्षा व्यवस्था का ही है। लेखक को शिक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ता है। सवर्णों द्वारा दलितों को शिक्षा से वंचित करने की हर संभव कोशिश की जाती है। इसमें शिक्षा के प्रति समाज एवं गांव के नकारात्मक रवैये को उजागर किया गया है। आजादी से पहले ईसाई मिशनरियों ने पहले–पहल दलितों के लिए शिक्षा के द्वार खोले, जिसकी वजह से दलितों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आई थी। वाल्मीकि जी लिखते हैं कि "हमारे मोहल्ले में एक ईसाई आते थे। नाम था सेवकराम मसीही । चुहड़ों के बच्चों को घेरकर बैठे रहते थे। पढ़ना– लिखना सिखाते थे। सरकारी स्कूल में तो

कोई घुसने नहीं देता था।"[3] कहा जा सकता है कि दलितों की स्थिति में सुधार ईसाई मिशनरियों की वजह से आया। लेखक के पिताजी उनको सरकारी स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए अथक प्रयास करते हैं। स्कूल में हेडमास्टर वाल्मीकि को दलित होने के कारण झाड़ू बनवाकर स्कूल की सफाई करवाते थे। सभी का व्यवहार दलितों के प्रति नकारात्मक रहा। दलित होने के कारण लेखक को रसायन विज्ञान की प्रायोगिक में फेल कर दिया जाता है। उसके बाद वे अध्ययन के लिए बरला से देहरादून जाते है। यह उनकी चेतना निर्माण का निर्णायक दौर रहा। डॉ. अम्बेडकर ने दलित चेतना और प्रगति का मुख्य आधार शिक्षा को माना है। शिक्षा ही व्यक्ति को अपने अधिकारों के प्रति जागृत करती है और जीवन संघर्ष में दृढ़ता से साथ देती है।

जातिगत भेदभाव : 'जातिगत भेदभाव' देश की अनूठी समस्या है। अमानवीयता इसका गुण है और शोषण इसका उद्देश्य। वाल्मीकि जी जातिगत भेदभाव का खुला वर्णन करते हैं। दलित जाति में जन्म होने के कारण यातनामय जीवन व्यतीत करना पड़ा। वाल्मीकि जी अपने मित्र के साथ मास्टर बृजलाल के घर उनके लिए गेहूं लाने जाते है। उनका ठीक से आदर सत्कार होता है किंतु जैसे ही उनके चूहड़ा होने का पता चलता है तो मेहमान नवाजी करने वाले ही गालियों की बौछार करते हुए हाथापाई पर उतर आते है। अंबरनाथ में प्रशिक्षण के दौरान ओमप्रकाश की मि. कुलकर्णी से अच्छी बनती है किंतु यहाँ भी कुलकर्णी परिवार समझ बैठा था की ओमप्रकाश वाल्मीकि ब्राह्मण है। कुलकर्णी के घर में कांबले के लिए अलग से चाय का कप। जाति से दलित होने के कारण वाल्मीकि जी स्कूल में हैण्डपम्प से पानी नहीं पी सकते थे। इसी कारण स्कूल में शिक्षकों और सवर्णों द्वारा शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना सहनी पड़ती थी। एक बार वाल्मीकि जी पत्नी के साथ राजस्थान भ्रमण से वाया दिल्ली–चंद्रपुर (महाराष्ट्र) पिंकसिटी एक्सप्रेस से लौट रहे थे। "पास की एक सीट पर संभ्रांत परिवार बैठा था। उनसे पत्नी की वार्तालाप होती है। इसके बीच जाति का सवाल पूछा जाता है। वाल्मीकि जी ने उत्तर दिया, 'भंगी'। 'भंगी' शब्द सुनते ही सन्नाटा छा गया।"[4] रास्ते भर दोनों परिवारों में कोई संवाद नहीं हुआ। जाति वह विष है, जो इंसान के मन में नफरत पैदा करता है और एक दूसरे को संदेह की निगाह से देखना आरंभ करती है। जाति का पता चलने से पूर्व सारे इंसान और उनके व्यवहार सहज–सरल है किंतु जाति का पता चलते ही, वे दो गुटों में विभाजित होते हैं।

अस्पृश्यता और परिवेश : 'जूठन' में अस्पृश्यता की समस्या भी देखने को मिलती है। वे लिखते हैं "अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते–बिल्ली, गाय–भैंस को छूना बुरा नहीं था लेकिन यदि चुहड़ें का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था।"[5] दलितों को सामाजिक स्तर पर इंसानी दर्जा नहीं था। दलितों के लिए स्कूल में पीने के पानी और कुलकर्णी के घर चाय के लिए अलग से व्यवस्था इंसानियत पर प्रश्न चिह्न खड़ा कर रही हैं। उनका बचपन बड़े ही विभत्स माहौल में बीता – 'चारों तरफ गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाए। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग–धड़क बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े बस, यह था वह वातावरण जिसमें बचपन बीता। इस माहौल में यदि वर्ण–व्यवस्था को आदर्श व्यवस्था कहने वालों को दो–चार दिन रहना पड़ जाए तो उनकी राय बदल जाएगी।[6] शिक्षा के प्रति उदासीन समाज को चित्रित किया है। स्कूल में मनुवादी अध्यापकों के रवैये को दिखाया है। जीवन की सुख–सुविधा और तमाम नागरिक सहूलियतों से वंचित दलित जीवन की त्रासदी उनके व्यक्तिगत वजूद से लेकर घर–परिवार, बस्ती और सामाजिक व्यवस्था तक फैली हुई है।

अंधविश्वास और रूढ़ियाँ : लेखक जिस समाज और परिवेश से हैं, वहाँ के लोग अज्ञानी और अंध श्रद्धालु है। उनके यहाँ पर हर समस्या का समाधान ताबीज या पशु–बलि माना जाता था। "भूत–प्रेत की छायाओं के प्रति पूरी बस्ती में अजीब माहौल था। जरा भी किसी की तबीयत खराब होती तो डॉक्टर के बजाय

किसी भगत को बुलाया जाता था।[7] लेखक एक बार बीमार थे। उनकी दवा – दारु चल रही थी। रिश्तेदार द्वारा ओवरा बताने पर उसका चिल्ला कर विरोध किया। उनका चिल्लाना अंधविश्वास पर गहरी चोट है। उन्होंने शादी के समय सूअर की बलि और सलाम प्रथा का विरोध किया। इसके संदर्भ में लेखक के पिता कहते हैं– 'तुम्हें पढ़ाना सफल हो गया।' वे समाज में व्याप्त गलत धारणाओं का खुलकर विरोध करते हैं।

निष्कर्ष : हम कह सकते हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने जाति– उत्पीड़न का जीवंत चित्रण अपनी आत्मकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। भारतीय समाज के यथार्थ को चित्रित किया है। मनुष्य– मनुष्य के बीच नफरत घृणा एवं भेदभाव को मिटाना है तो समाज में समानता और बंधुत्व की भावना को जागृत करना होगा। मानवतावादी समाज का निर्माण करना दलित साहित्य का उद्देश्य है। 'जूठन' के लेखक के जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेनी चाहिए। दलित समाज के उत्थान के लिए शिक्षा ही महत्वपूर्ण हथियार है।

– **धर्मवीर,** (शोधार्थी)
हिंदी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
मो. – 8332907096

संदर्भ :

1. डॉ. अमरनाथ, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्र., नई दिल्ली, सं. 2018, पृ. 173
2. शिवबाबू मिश्र, जूठन : एक विमर्श (संपादित), शब्द सृष्टि, नई दिल्ली, भूमिका
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (पहला खंड), राधाकृष्ण प्र., नई दिल्ली, पृ. 2
4. वही, पृ.162
5. वही, पृ.12
6. वही, पृ.11
7. वही, पृ. 37

अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक बुद्धिमता : एक अध्ययन

– **किरन आर्या**[1] (शोधार्थी)
– **डॉ. रेनू रावत**[2]

सारांश – प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखंड के जनपद नैनीताल के स्नातक स्तर में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण विधि से स्नातक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के 100 (छात्र 50, छात्राएं 50) को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है। सांख्यिकीय परिगणना में टी परीक्षण द्वारा निष्कर्ष में छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक बुद्धिमत्ता में सार्थक अन्तर पाया गया। छात्रों में सामाजिक बुद्धिमत्ता व उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक पायी गयी। जिन बच्चों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च पाई गई, उनमें सामाजिक बुद्धिमत्ता का स्तर भी उच्च पाया गया है। जो एक सकारात्मक सहसम्बध को दर्शाता है।

शब्द कुंजी – अनुसूचित जाति, उपलब्धि अभिप्रेरणा, सामाजिक बुद्धिमत्ता, सहसम्बध ।

प्रस्तावना – शिक्षा संज्ञान, भाव और कियात्मकता के अलावा अपने अधिकारों को जानने व सही गलत में अंतर करना भी सिखाती है। अनुसूचित जातियों का प्राचीन समय से शोषित, उत्पीडित और अस्पृश्यता का इतिहास रहा है। भारतीय संविधान ने इन्हें सभी उत्पीडन से मुक्त कर एक समान सामाजिक धारा में लाने का प्रयास किया। डॉ. भीम राव आंबेडकर, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई जैसे महान लोगो ने अनुसूचित समुदाय के लोगो को समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किये, जिनके हम हमेशा ऋणी रहेंगे। शिक्षा समाज में अपना अस्तित्व बनाने के लिए मानव जीवन को सही दिशा प्रदान करती है। लक्ष्यों को निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने का प्रयास उपलब्धि के रूप में जाना जाता है। उपलब्धि अभिप्रेरणा

अर्थात ऐसे अभिप्रेरण, जिनसे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को सही तरीके से करके अधिकतम सफलता प्राप्त करता है। इनमें जन्मजात व अर्जित अभिप्रेरकों को जिम्मेदार माना जाता है। सामाजिक परिवेश से व्यक्ति इन्हें आत्मसात कर उपलब्धि के लिए प्रेरित होता है। इनमें अधिगम मुख्य तत्व है जो सभी प्रकार की क्रियाओं को सीखने में संयोजी कड़ी का कार्य करता है। समाज मानवीय गुणों का दर्पण होता है, जहां बच्चे मानवीय क्रियाएं, आचरण, सामाजिक सुरक्षा और आत्मसिद्धि के गुणों को सीखते हैं। व्यक्ति समाज में रहकर मानवीय संबंध बनाता है जिससे सामाजिक बुद्धिमत्ता का विकास होता है। जो समाज में व्यक्ति की एक अलग पहचान बनाने में सहायक होते हैं। समाज में रहने के लिए सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करना आवश्यक होता है। 1920 में मनोवैज्ञानिक एडवर्ड थार्नडाइक ने सामाजिक बुद्धि को व्यक्ति के समझने और मानवीय संबंधों को समझ के साथ कार्य करने की क्षमता के रूप में माना। जो संज्ञानात्मक व व्यावहारिक दोनों पक्षों से संबंधित है। चड्ढा व गणेशन (1986) सामाजिक बुद्धि परीक्षण के अनुसार सामाजिक बुद्धि में धैर्य, सहयोग, आत्मविश्वास, संवेदनशीलता, सामाजिक वातावरण की पहचान, व्यवहार कुशलता, हास्यास्पद कौशलता, स्मृति आयामों द्वारा व्यक्ति अपनी सामाजिक बुद्धि बढ़ाने में सफल हो सकता है।

आवश्यकता एवं महत्व – समाज में संतुलन बनाए रखने का प्रयास करना मानव की जिम्मेदारी है। सामाजिक बुद्धिमत्ता अंर्तक्रिया व संबंध बनाने में सहायक होती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने व समाज में अपना अस्तित्व बनाने का ज्ञान कराती है। अनुसूचित समुदाय की समाज में अपनी चुनौतियाँ होती है जो सामाजिक, व्यावहारिक व आर्थिक पक्षों से संबंधित होती है। ऐसे में शिक्षा एक आधारशिला है जो समानता व सामाजिक गतिशीलता के साथ सामाजिक विकास कर सकती है। ऐसे में अनुसूचित जाति के बच्चों में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक बुद्धिमत्ता व उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर जानना बहुत आवश्यक है। **भारद्वाज और शर्मा (2021)** ने विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धिमत्ता, संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के अध्ययन में लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। **राणा (2022)** ने किशोर बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन में सरकारी विद्यालयों के बच्चों बालक और बालिकाओं के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। **सुसवांडी** व **अन्य (2023)** ने भावात्मक बुधिमत्ता, अधिगम अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्धों में भावात्मक बुधिमत्ता को सीखने की प्रेरणा में प्रभावी पाया।

उद्देश्य –

1. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, सामाजिक बुद्धिमत्ता व सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध परिसीमन –

शोध के निष्कर्ष केवल नैनीताल जनपद के स्नातक स्तरीय अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तक सीमित है।

परिकल्पना –

1. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अंतर नहीं है।

3. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवंम सामाजिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

जनसंख्या व न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में जनपद नैनीताल के स्नातक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं को जनसंख्या के रूप में लिया है। यादृच्छिक शोध विधि द्वारा 100 विद्यार्थियों (50 छात्र 50 छात्राओं) का चयन किया गया।

शोध उपकरण –

1. उपलब्धि अभिप्रेरणा (देवो एवं मोहन द्वारा निर्मित)

2. सामाजिक बुद्धिमत्ता स्केल (डॉ. चड्ढा एवं गणेशन द्वारा निर्मित)

क्र.सं	चर	संख्या	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता अंश	सार्थकता स्तर(.05)
1	उपलब्धि अभिप्रेरणा	50	छात्र	208.9	14.7	44.86		सार्थक
		50	छात्राएं	105.6	7.00			
2	सामाजिक बुद्धिमता	50	छात्र	210	9.89	6.478	98	सार्थक
		50	छात्राएं	198	7.0			
3	सहसंबंध	100	पियर्सन सहसंबंध गुणांक r = 0.4					सार्थक

तालिका संख्या-01

सांख्यिकीय विधि – प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु टी परीक्षण का विवरण –

परिकल्पना –

1. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

उपरोक्त तालिका में सार्थकता स्तर 0.5, (df–98) पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर सांख्यिकीय परिगणना टी मान से अधिक पाया गया। जिस आधार पर उपरोक्त परिकल्पना निरस्त की जाती है।

2. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

उपरोक्त तालिका में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धिमत्ता स्तर में विद्यार्थियों के सांख्यिकीय परिगणना टी मान से अधिक है। अतः उपरोक्त परिकल्पना निरस्त की जाती है।

3. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक बुद्धिमत्ता के मध्य धनात्मक सार्थक सहसम्बध पाया गया है जो यह दर्शाता है कि सामाजिक बुद्धि के बढ़ने पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर भी बढता है।

निष्कर्ष – शोध परिकल्पना का सांख्यिकी परीक्षण करने पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया है। व्यक्तिगत भिन्नता के कारण समाज में प्रत्येक व्यक्ति के अपने निर्धारित उद्देश्य, लक्ष्य अलग–अलग होते हैं। अर्थात महिला एवं पुरुष में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर भिन्न होता है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धिमत्ता में सार्थक अन्तर पाया गया है। हमारा परिवेश, वातावरण, लिंग, समाज, समायोजन, तथा संबंधों को स्थापित करना आदि सामाजिक बुद्धि को विकसित करने का कार्य करता है। छात्राओं को पारिवारिक पृष्ठभूमि, संरक्षण, सुरक्षा व अन्य पितृसत्तात्मक परिधि में रहने के कारण सामाजीकरण का अवसर कम मिल पाता है। जो व्यक्तिगत भिन्नता के अलावा छात्राओं में सामाजिक बुद्धिमत्ता कम होने का कारण बन सकता है।

– किरन आर्या[1]
Mob. 9720633586
– डॉ. रेनू रावत[2]
1. पी. एच. डी. (शिक्षाशास्त्र), एम.बी. जी.पी.जी. कॉलेज हल्द्वानी, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल(उत्तराखंड)
2. असिस्टेंट प्रोफेसर, एम. बी. जी. पी. जी. महाविद्यालय, हल्द्वानी

संदर्भ :
1. Arya, K- (2022), उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य एवं सामाजिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययनI JARESM peer reviewed journal 7647 vol- 10, issue 8, ISSN - 24556211
2. Arya, K- (2025) उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके उपलब्धि अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में अध्ययन IJFMR UGC Refereed Journal (peer reviewed) multidisciplinary journal vol-7 issue-1, January & February 2025, ISSN-2582-2160, doi: 10-36948/ijfmr-2025-v07i01-37473 www-ijfmr-com

दलित विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे उल्लेखित समावेशी नीतियाँ

– डॉ. मृदुला शर्मा

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध भारतीय दलित जातियो की शैक्षिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सामाजिक और आर्थिक वंचित समूह (SEDGs) के विद्यार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु किए गए प्रावधानों का वर्णन प्रस्तुत करता है। हालाँकि देश में दलितों की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, लेकिन उनके हितों की रक्षा के लिए कोई विधायी उपाय नहीं हो पाये हैं। अतः एनईपी 2020 का लक्ष्य देश के सामग्र विकास के लिए समाज के सभी वर्गों की अनिवार्य शैक्षिक आवश्यकताओं को समान रूप से पूर्ण करना है।

बीज शब्द–अनुसूचित जाति, शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शैक्षिक स्थिति, प्रावधान।

प्रस्तावना –

विश्व के लगभग सभी देशों के समक्ष उनके समस्त नागरिको तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच एक बड़ी चुनौती के रूप मे रही है। भारत में, महिलाएं, अल्पसंख्यक, एससी और एसटी, ओबीसी, पीडब्ल्यूडी, ईडब्ल्यूएस जैसे कई वंचित समूह, शिक्षा के क्षेत्र में आज भी पिछडे हुए हैं। शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का एकमात्र प्रभावी साधन है। भारत के संविधान में परिकल्पित समावेशी और बहुलतावादी समाज का निर्माण गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा द्वारा ही संभव है।

भारत में लगभग 201.4 मिलियन व्यक्ति अनुसूचित जाति से संबंधित है। 2011 की जनगणना के अनुसार ये कुल जनसंख्या का 16.63% है। 2011 मे अनुसूचित जाति की साक्षरता दर 66.1 प्रतिशत थी। लेकिन इसी अवधि में राष्ट्रीय साक्षरता दर 73.0 प्रतिशत थी। आजादी के पश्चात भारत की शैक्षिक व्यवस्था को सुधारने और शिक्षा तक सब की पहुंच बढ़ाने के लिए कई शिक्षा नीतियां आई। लेकिन वे सभी दलितों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने और सामाजिक समानता लाने के प्रयास मे प्रायः असफल ही रही । मानव विकास सूचकांको से ज्ञात होता है कि भारत में आज भी अनुसूचित जातियां सामाजिक आर्थिक स्तर के सबसे निचले स्तर पर हैं। गरीबी, सामाजिक रीति–रिवाज, प्रथाओं और भाषा सहित विभिन्न कारकों से प्रभावित होने के कारण दलित वर्ग स्कूलों तक पहुंचने में असमर्थ है। शैक्षिक संसाधनों के उपयोग में ये सामान्यतः गैर दलितों से पीछे हैं। द इंडिया गवर्न्न्स रिसर्च इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट कहती है कि प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वालों में लगभग आधे दलित होते हैं।

शोध उद्देश्य

नई शिक्षा नीति 2020 में दलित विद्यार्थियों हेतु किए गए शैक्षिक प्रावधानो का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख मे तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्रोतों जैसे सरकारी स्रोत, पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, शोध पत्रों, ब्लॉगों और वेबसाइटो के माध्यम से किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में दलित विद्यार्थियों हेतु किए गए शैक्षिक प्रावधान

भारत सरकार द्वारा 2015 में वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 'विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा उपलब्ध कराने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों में वृद्धि किए जाने को अपनाया गया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत मे सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को पुनर्गठित करने हेतु नई शिक्षा नीति 2020 की संकल्पना की गई। इस नीति का मुख्य उद्देश्य 2040 तक भारत के

समस्त सामाजिक और आर्थिक वंचित समूह (SEDGs) से संबंधित विद्यार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध करवाना है। एसईडीजी समूह में दलित वर्ग भी सम्मिलित है। इनके शैक्षिक विकास के लिए नई शिक्षा नीति में निम्न प्रावधान किए गए हैं–

1. ड्रॉप आउट बच्चों की संख्या कम करना और सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना (भाग एक, बिंदु 3)–खंड 3.5 मे यह नीति एसईडीजी समूह पर विशेष ध्यान देते हुए विद्यार्थियों को सीखने में मदद करने के लिए स्कूली शिक्षा के दायरे को व्यापक बनाने पर जोर देती है। जिससे इन समुदायों के बच्चों को औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के अंतर्गत शिक्षित होने के विभिन्न मार्ग उपलब्ध हो सके। दलित परिवारों के विद्यार्थियों और अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता और रुचि बनाए रखने के लिए मजबूत चैनल और स्थानीय भाषा मे शिक्षा पर विशेष बल भी दिया गया है।

2. समतामूलक और समावेशी शिक्षा सभी के लिए अधिगम (भाग एक, बिंदु 6)–खंड 6.2 में कहा गया है कि कक्षा 1 से 12 तक विद्यार्थी नामांकन के गिरावट मे सर्वाधिक प्रतिशत एसईडीजी का है (विशेषतः महिलाऐ)। उच्च शिक्षा में इन समूहों के विद्यार्थी नामांकन में गिरावट और अधिक है। यूडीआईएसई 2016–17 के आंकड़ों अनुसार प्राथमिक स्तर पर लगभग 19.6 प्रतिशत विद्यार्थी अनुसूचित जाति के हैं लेकिन उच्च माध्यमिक स्तर पर यह प्रतिशत कम होकर 17.3 रह गया। अतः अनुसूचित जातियों के बच्चों की विद्यालय शिक्षा तक पहुंच, सहभागिता और अधिगम परिणाम में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों को दूर करना एन ई पी 2020 के प्रमुख लक्ष्यो में से एक होगा। खंड 6. 4 मे एसईडीजी के लिए लक्षित छात्रवृत्ति, माता – पिता द्वारा बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सशर्त नकद हस्तांतरण, परिवहन के लिए साइकिल प्रदान करना आदि नीतियों और योजनाओं के बारे में उल्लेख है। खंड 6.19 के अनुसार स्कूल शिक्षा प्रणाली के सभी प्रतिभागियों को सभी छात्रों की आवश्यकताओं, समावेशन और समानता की धारणाओं, व्यक्ति सम्मान, प्रतिष्ठा और निजता के प्रति संवेदनशील बनना होगा। शिक्षक शिक्षा मे भी समावेशन और समानता को एक प्रमुख पहलू बनाया जाएगा। इसी के साथ एसईडीजी समूह में से उच्चतर गुणवत्ता युक्त शिक्षक और नेतृत्व कर्ताओं का अधिक से अधिक चयन कर, विद्यार्थियों के समक्ष उत्कृष्ट रोल मॉडल स्थापित करने होंगे।

3. सीखने के लिए अनुकूल वातावरण व छात्रों को सहयोग (भाग 2 बिंदु 12)– खंड 12.4 में कहा गया है कि एसईडीजी छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इसीलिए उन्हें प्रोत्साहन और समर्थन की आवश्यकता है। इस दिशा में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को उच्च–गुणवत्ता वाले सहायता केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता होगी और इसे प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए पर्याप्त धन और शैक्षणिक संसाधन दिए जाएंगे। सभी छात्रों के लिए पेशेवर शैक्षणिक और कैरियर परामर्श भी उपलब्ध होगें । खंड 12.10 निर्दिष्ट करता है कि एससी, एसटी, ओबीसी और अन्य एसईडीजी से संबंधित छात्रों की योग्यता को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जाएंगे। इस दिशा में छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की प्रगति को समर्थन, बढ़ावा देने और ट्रैक करने के लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल का विस्तार किया जाएगा।

4. उच्चतर शिक्षा में समता और समावेशन (भाग 2, बिंदु 14) – सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की शिक्षा में आने वाले अवरोधों, चुनौतियों को समाप्त करने के लिए यह शिक्षा नीति सरकारों और उच्च शिक्षण संस्थाओं को दिशा–निर्देश भी प्रदान करती है जिसमें उनकी शिक्षा के लिए समुचित सरकारी

निधि का निर्धारण, उच्च गुणवत्ता युक्त उच्चतर शिक्षण संस्थाओं का निर्माण, विशेष शिक्षा क्षेत्र निर्माण, उच्च शिक्षण संस्थानों में वित्तीय सहायता, छात्रवृत्ति के प्रति जागरूकता, समावेशी प्रवेश प्रक्रियाएं, समावेशी पाठ्यक्रम, स्थानीय भाषा या द्विभाषी अध्ययन, ब्रिज पाठ्यक्रम, भेदभाव उत्पीड़न के खिलाफ कठोर नियम पालना आदि सम्मिलित हैं।

शोध निष्कर्ष

राष्ट्र के विकास में सभी को साथ लेकर चलना भारत सरकार का प्रमुख लक्ष्य है। इसीलिए एन ई पी 2020 सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूहों से संबंधित छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को दृष्टिगत करते हुए संबंधित समस्याओं का निराकरण प्रस्तुत करती है। दलित वर्ग अपनी परिस्थितिजन्य बाधाओ के बावजूद भी शिक्षा प्राप्त कर अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन व योगदान देश के लिए कर सकें, इसकी योजना स्पष्ट

– डॉ मृदुला शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़ (राजस्थान) मो.नं. 9636899575

संदर्भ :

राघवेंद्र, आर. एच.(2020) – लिटरेसी एंड हेल्थ स्टेटस ऑफ शेड्यूल्ड कास्ट इन इंडिया । कंटेंपरेरी वॉइस आफ दलित, सेज पब्लिकेशंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 12 (1), 97–110

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार ।

सोनी, ए.(2023)। एनईपी 2020 में वंचित समूहों (एसईडीजी) के लिए प्रावधान – इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन एंथ्रोपोलॉजी DOI : 10-21088/ijra-2454-9118-9223-1

www-ugc-gov-in

http://www-education-gov-in

भारत में जातिगत असमानता की आधुनिक मनोवृत्ति

– डॉ. महेश जगोठा
– डॉ. राकेश लाल शाह

परिचय – विषमता या असमानता की समस्या मानवीय समाज में प्राचीन काल से ही रही है। प्राचीनकाल में राजनीति विज्ञान के पिता कहे जाने वाले अरस्तु ने जहां विषमता की अनुभूति के कारण राज्यों में विद्रोह की स्थिति को उजागर किया है, वहीं दूसरी तरफ राज्य व समाज की संरचना में अरस्तू के द्वारा स्त्री बच्चों व दासों को नागरिकता से वंचित कर दास प्रथा का सामाजिक व्यवस्था के लिए अनिवार्यतः समर्थन किया गया।[1] विषमता या असमानता से संबंधित भाव का जहां प्राचीन काल में सीमित नागरिकता, महिलाओं को कमजोर मानकर उनको पुरूषों से कमतर अधिकार देने जैसे तमाम उदाहरण देखने को मिले है। वहीं मध्यकाल में धर्म की सर्वोच्चता राजतंत्र व सामंतवाद की प्रभुता के चलते पोप, राजा, राजा के मंत्री, सामंत सरदारों को ही विशेषाधिकार प्राप्त थे बाकी अन्य सभी इनके चाकर ही थे, जबकि आधुनिक काल में अमेरिकी स्वतंत्रता (1776) व फ्रांसिसी क्रांति (1789) से पहले तक समाज में धन संपदा मान–मर्यादा तथा शक्ति की विषमताओं को स्वाभाविक और अटल व्यवस्था के रूप स्वीकार किया जाता रहा, अमेरिका की स्वतंत्रता व उसके संविधान में समानता के अधिकारो के प्रादुर्भाव के बाद भले ही पूरे विश्व के साथ – साथ भारत ने भी अपने संविधान में समानता के अधिकार को अपने नागरिकों को दिया है परंतु पुराने परंपरागत भारतीय समाज में जिसमें ब्राहमण (ज्ञान) क्षत्रिय (प्रतिक्षा) वैश्य (संपत्ति) और शूद्र (श्रम) के उत्तरदायित्वों के साथ जोड़े गए थे में श्रम और सामाजिक जुड़ाव को लेकर जो नीति नियम बने उन्होंने भारतीय समाज में एक असमानता से पूर्ण सामाजिक संस्कृति को इस कदर स्थापित कर दिया,

जिसने लंबे समय तक सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व विचारधारागत, आधारो पर लगातार इस विषमता को एक प्राकृतिक जलस्रोत के समान सींचने का काम किया, जो वर्तमान में भी भारतीय संविधान में वर्णित समानता के अधिकारों को अपने आचरण से कई बार भ्रमित कर असमानता के आधुनिक संस्करणों को लगातार तैयार करते जा रहा है। भले ही 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 से 18 में व्यापक रूप से समानता के अधिकार को मौलिक अधिकारों के रूप में वर्णित किया गया है परंतु भेदभाव की सत्ता आसीन परंपरागत मानसिकता ने इन अधिकारों को अपनी सहुलियत व सुविधा अनुसार लगातार तिरस्कृत ही किया है। क्योंकि समाज ने इन अधिकारों का अपनी सुविधानुसार दुरूप्रयोग कर भेदभाव के आधुनिक संस्करणों को बनाकर इस समस्या को जस का तस बनाए रखा हुआ है, जिसकी प्रवृत्ति को भारत के लिए पैदा हो रहे सामाजिक वैमनस्य, सामाजिक अलगाव, सामाजिक एकता व अखण्डता के लिए सबसे बड़े खतरे व इसकी मनोवृत्ति से समाज में पैदा होने वाले अन्य प्रभावों के संदर्भ समझना अति आवश्यक हो जाता है ।

भारत में जातिगत असमानता की आधुनिक मनोवृत्ति :–

यदि परंपरागत विषमता अपने आपको श्रेष्ठ व उच्च बताने के लिए जातिगत, आर्थिक व सामाजिक आधार पर भेदभाव को मानती है तो ऐसी स्थिति में उसको विषमता के और भी गहरे पैमाने तकनीकी रूप से भी वर्गीकृत करने होगें जिसके तहत सिर्फ और सिर्फ वह अपने जाति, धर्म व विरादरी के ही रक्त, नेत्र, किडनी या फिर अन्य अंगों को ही अपने उपचार के रूप में ग्रहण करने की इजाजत दें और जिस प्रकार सामाजिक जीवन में वो अनेक परंपरागत श्रेष्ठता मापदंड़ो को वर्गीकृत कर उनको अपनी श्रेष्ठता व दूसरो की हीनता के लिए इस्तेमाल करते है, अपने उपचार व प्राणों की रक्षा के संदर्भ में भी वो उसी प्रकार की श्रेष्ठता व हीनता की मानसिकता से वर्गीकरण करना सीखे। जिसके संदर्भ में वे पूर्णतः तटस्थ या फिर सदा मौन ही नजर आते है इस प्रकार परंपरागत विषमता के तहत जो वर्गीकरण श्रेष्ठता व हीनता के संदर्भ में निर्धारित किया गया है। उसका इस्तेमाल अक्सर अपनी सुविधानुसार परंपरागत विषमता या जातिगत असमानता व्यवहारिक रूप से करती हुई प्रतीत होती है जबकि वैचारिक रूप से वो हीनता के सभी स्तरों के तिरस्कार की बात करती हुई प्रतीत होती है जो कहीं न कहीं उसमें उपस्थित एक बड़े स्तर की खामी या दोहराव की मानसिकता को उजागर करता है ।

इस प्रकार विश्लेषणात्मक दृष्टि से परंपरागत विषमता के औचित्य को समझने की चेष्टा करे तो इसकी भूमिका व प्रकृति बहुत ही संकुचित है, जो अति विश्वास व अनैतिकता के बल पर दूसरे की नैतिकता व सादगी का फायदा उठाकर उस पर अपनी सर्वोच्च मानसिकता से पोषित प्रकृति व सोच को थोपती है। यदि हम समाज में शोषण व भेदभाव की मानसिकता को समझने की चेष्टा करें तो इसके संदर्भ में हम अपने आपको श्रेष्ठ व दूसरे को हीन मानने वाली मानसिकता के साथ उस मानसिकता का भी जिक्र करेंगे जो दूसरे की श्रेष्ठ रूपी मानसिकता का शिकार आसानी से हो जाती है। इस प्रकार के वर्गीकरण के लिए हमें इन दोनो मानसिकता की विशेषता सकारात्मक व नकारात्मक रूप से करनी होगी। यदि हम आधुनिक भारतीय परंपरागत समाज में जातिगत भेदभाव के आधुनिक तौर–तरीकों व संस्करणों का जिक्र करें तो ऐसे बहुत से पैमाने है जिन से आज भी शोषण होता है जो इस प्रकार से है। जैसे किसी का नाम पूछकर उसके सर नेम से ही उसकी जाति की पहचान कर उसको उसकी श्रेणी में प्रथम मुलाकात में ही रख देना, कहीं पर उच्च शिक्षा व शिक्षा के लिए बाहर जाने पर नाम स्थान पूछकर उनको उनकी श्रेणी के हिसाब से भाव देना या एहसास

करवाना और सरनेम पूछकर अपनी विरादरी या ब्राहमण, क्षत्रिय और वैश्य है तो उसको किराए पर मकान देने के लिए हामी भरना जबकि निम्न जाति का होने पर उसे बहाना बनाकर मना कर देना जैसे तमाम प्रकार के वे आधुनिक तरीके या संस्करण आज भी भेदभाव के बन चुके है जिसने परंपरागत विषमता को लगातार प्रसारित कर इसकी संरचना के फैलाव को बढ़ावा दिया है ।

निष्कर्ष

परंपरागत भारतीय समाज में जातियों के वर्गीकरण ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को इसी श्रेणी में विशेषाधिकार और सामाजिक सत्ता प्रदान कर भारतीय समाज को चार श्रेणियों में तोड़ने का काम किया है। जिसने भारत को एक संस्कृति के रूप में विकसित होने से लगातार रोके रखा। जिस कारण सामाजिक प्रक्रिया का यह चरण भेदभाव की एक गहरी संरचना को तैयार कर भारत में जातिगत भेदभाव के सशक्त आधारों को निर्धारित करने में कामयाब रहा। समकालीन भारत में लोकतंत्र की स्थापना के बाद से भले ही समानता के अधिकार को अनुच्छेद (14 से 18) में भारतीय संविधान में जगह मिली हो परंतु समकालीन समय में इसका आचरण मात्र कानून तक ही सीमित होकर रह गया है। जबकि समाज में आज भी जातिगत असमानता व उसकी मनोवृत्ति एक संस्कृति के तौर पर लगातार भेदभाव करती जा रही है। जहां प्राचीन व मध्यकाल में जातिगत असमानता की मनोवृत्ति बहुत कठोर थी वहीं आधुनिक व समकालीन समय में इसने अपनी कठोरता को काफी मायनों में तो जरूर त्यागा है परंतु अपने नरम रवैये के तहत इसने आज भी अपनी स्थिति को जस का तस रखा हुआ है। नरम रवैये के तहत सत्ता पर रहते हुए अपनी बिरादरी को ज्यादा अवसर देना, व निम्न वर्गो को परेशान करना जैसे शामिल हैं जिनका प्रचलन आज बड़े स्तर पर लगातार हो रहा है, भेदभाव का ये आधुनिक संस्करण विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र (मदर ऑफ डेमोक्रेसी) में आज भी इतना प्रभावी है कि जो भारत को आज भी लगातार कई रूपों में विभाजित किए हुए है जिससे जातिगत, विद्वेष, विद्रोह व संघर्ष की स्थिति लगातार देश में बनी हुई है, जिस कारण एक राष्ट्र के रूप में भारत अपनी राष्ट्रीय एकता अखण्डता व बंधुत्व की जड़ों को अपनी परंपरागत संस्कृति में जोड़ने में लगातार असफल ही रहा है। जिस कारण देश में आज अलगाववाद, आतंकवाद व जातिगत हिंसाओं में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। जो लोकतंत्र की नीव व मानवतावाद को भारत में अंदर से लगातार खोखला करते जा रही है।

– डॉ. महेश जगोठा
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग,
स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय,
(पूर्व में हिमालयीय विश्व विद्यालय)
डोईवाला, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो. 7895752338

– डॉ. राकेश लाल शाह
एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
डी.ए.वी. पी.जी.) कॉलेज, देहरादून, उत्तराखण्ड

संदर्भ :

1. भार्गव, राजीव और चौबे कमल नयन, राजनीति सिद्धांत एक परिचय पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2020, पृ. 62
2. गाबा, ओम प्रकाश, राजनीति विज्ञान विश्वकोष, मयूर पेपरबैक्स, नई दिल्ली 2017, पृ. 242, 243
3. कोठारी, रजनी, भारत में राजनीति कल और आज, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2020, पृ. 44.
4. स्मिथ, एंडी, जाति व्यवस्था भेदभाव : अर्थ और इसके परिणाम इनवेंस्टोपी डिया, 22 फरवरी 2024
   https://www-investopedia-com/caste discrimination- and-consequences-8421061
5. सीजेपी, भारत में जातिगत भेदभाव और उससे संबंधित कानून, मेन्यू सीजेपी, 25 जनवरी 2018. https://cjp-org-in/caste-discrimination-and-related-laws-in-india/

Buddhism and Business Management

- Professor Mukesh Ranga

Abstract -

Buddhism stands as one of the largest global religions, tracing its roots to India and the teachings of Siddhartha Gautama, known as Gautama Buddha. He lived in India from approximately 563 BCE to 480 BCE. Followers of Buddhism, termed Buddhists, embrace the belief in reincarnation, asserting that death is not the culmination but rather a transition into a new life. Central to Buddhist philosophy is the pursuit of enlightenment, or Nirvana, seen as the key to breaking the cycle of rebirth. While Buddhism has a global presence, its primary stronghold is in East and Southeast Asia.

Keywords - Buddhism, Business, Management

Introduction -

History of Buddhism :

Buddhism, one of the world's major religions, traces its origins to the teachings of Siddhartha Gautama, the Buddha. Born in the 6th century BCE in Lumbini, in present-day Nepal, Gautama embarked on a spiritual quest to understand the nature of human suffering. Around 528 BCE, he attained enlightenment under the Bodhi tree in Bodh Gaya, becoming the Buddha, which means the "Awakened One."

The Buddha's teachings, encapsulated in the Four Noble Truths and the Eightfold Path, formed the core of Buddhism. The Four Noble Truths outline the nature of suffering, its origins, its cessation, and the path leading to liberation from suffering. The Eightfold Path provides a guide for ethical and mental development.

In the 20th century, Buddhism experienced a revival in India, partly due to the efforts of figures like Dr. B.R. Ambedkar, who embraced Buddhism as a means of social and political emancipation.

Top Ten Countries following Buddhism -

Country	Buddhist %
Cambodia	96.8%
Thailand	92.6%
Myanmar	79.8%
Bhutan	74.7%
Sri Lanka	68.6%
Laos	64%
Mongolia	54.4%
Japan	33.2%
Singapore	32.2%
South Korea	21.9%

Source- https://worldpopulationreview.com/country-rankings/buddhist-countries

Major part of Buddhist population is covered by first seven countries.

Literature review

Modern Business Management Enlightened by Ancient Buddhist Wisdom: A chapter from the Handbook of Practical Wisdom in Business and Management that reviews the literature integrating modern business management with ancient Buddhist thought and argues that Buddhism provides a practical platform for ethical decision-making and responsibility in business. (Stirling, K., 2020)

Buddhist entrepreneurs, charitable behaviors, and social entrepreneurship: An article that investigates how Buddhism influe-nces social entrepreneurship in different regions within a nation and proposes a mediating framework where the percentage of Buddhist entrepreneurs in a region is positively associated with prosocial behaviors and the probability of establishing businesses in a lessdeveloped region. (Zuhui Xu, Zhiyang Liu & Jie Wu, 2022)

Zhao and Lounsbury (2016) investigated the impact of religious diversity on the resource acquisition of micro-financing organizations. They discovered a negative correlation between the religious diversity of a country and the availability of commercial capital within it.

Principles of Management and Buddhism

Principles of management are fundamental guidelines that serve as a foundation for the practice and understanding of effective managerial activities within organizations. These principles help guide decision-making, organizational behavior, and overall management strategies. While the principles of management and Buddhist principles may originate from different contexts, there are interesting parallels and potential intersections between them.

Concept	*Management*	*Buddhism*
Mindful Decision-Making	Effective decision-making is a fundamental management principle. Managers are encouraged to make well-considered and thoughtful decisions	Mindfulness, a core Buddhist principle, involves being fully present and aware in each moment. This awareness is also applicable to decision-making, emphasizing thoughtful and intentional choices.
Unity of Purpose	The principle of unity of direction emphasizes aligning all activities towards common organizational goals.	Buddhism encourages individuals to work towards collective well-being and the greater good, fostering unity and interconnectedness.
Division of Labor and Interdependence	Division of labor enhances efficiency by assigning specific tasks to individuals based on their skills	Emphasizes interdependence and the idea that all elements of existence are interconnected, mirroring the collaborative nature of tasks in management.
Ethical Conduct	Many management principles, such as fairness in remuneration and treating employees justly, align with ethical considerations.	Ethical conduct is a central theme, with principles like the Five Precepts guiding individuals towards moral and responsible behavior.
Leadership Qualities	Effective leadership principles often include qualities like inspiration, motivation, and fostering a positive work environment.	Buddhist leadership, often seen in the context of spiritual or community leaders, emphasizes compassion, wisdom, and creating harmonious environments.
Continuous Improvement	The principle of initiative encourages employees to take initiative and contribute to continuous improvement.	The concept of continuous improvement is reflected in the Buddhist idea of self-cultivation and the pursuit of enlightenment.
Equity and Fair Treatment	Equity is a management principle emphasizing fair treatment and just compensation for employees.	The principle of equity is reflected in Buddhism's emphasis on compassion, treating all beings with fairness and kindness.
Balanced Approach	Balancing various organizational elements is crucial for success.	The Middle Way, a key Buddhist principle, advocates for moderation and avoiding extremes.

It's important to note that while there are similarities, the cultural and philoso-phical contexts of management principles and Buddhism are distinct. However, exploring these intersections can offer valuable insights for individuals seeking a holistic and ethical approach to organizational management.

Conclusion :

In summary, Buddhism and business management are two distinct areas of study, but there are principles in Buddhism that can be applied to business management, such as mindfulness, compassion, wisdom, and ethics.

Buddhism and business management may seem like two quite different subjects, but there are some interesting connections between the two.

Another important aspect of Buddhism is the idea of compassion, which involves cultivating empathy and understanding for others. This same principle can be applied in the context of business management, as compassionate leaders are more likely to create a positive work environment, foster trust and loyalty among employees, and make decisions that are fair and equitable.

Additionally, Buddhism emphasizes the importance of letting go of attachments and desires, which can be helpful in the context of business management where leaders may need to make complex decisions or navigate uncertain situations. By letting go of their attachment to specific outcomes or goals, leaders can be more flexible and adaptable, which can help them to respond more effectively to changing circumstances.

Overall, while Buddhism and business management may seem like vastly different subjects, there are some interesting connections between the two that can be beneficial for leaders and managers looking to improve their skills and create a more positive work environment.

- Professor Mukesh Ranga
School of Business Management
CSJM University, Kanpur (UP)
Mob. 9473919640

References :

Angelidis, J., & Ibrahim, N. (2004). An exploratory study of the impact of degree of religiousness upon an individual's corporate social responsiveness orientation. Journal of Business Ethics, 51(2), 119–128. https://doi.org/10.1023/B:BUSI.0000033606.27489.bf

Audretsch, D. B., Bönte, W., & Tamvada, J. P. (2013). Religion, social class, and entrepreneurial choice. Journal of Business Venturing, 28(6), 774-789. https://doi.org/10.1016/j.jbusvent.2013.06.002

Samuel L. Dunn, Joshua D. Jensen (2019), Buddhism and Buddhist Business Practices, International Journal of Business Administration, 10(2), 115-128 https://doi.org/10.5430/ijba.v10n2p115

Stirling, K. (2020). Modern Business Management Enlightened by Ancient Buddhist Wisdom. In: Schwartz, B., Bernacchio, C., González-Cantón, C., Robson, A. (eds) Handbook of Practical Wisdom in Business and Management. International Handbooks in Business Ethics. Springer, Cham. https://doi.org/10.1007/978-3-030-00140-7_9-1

Top ten Buddhist Retrieved January 23, 2024, from Countries, https://worldpopulationreview.com/country-rankings/buddhist-countries

Xu, Z., Liu, Z. & Wu, J. Buddhist entrepreneurs, charitable behaviors, and social entrepreneurship : evidence from China. Small Bus Econ 59, 1197-1217 (2022). https://doi.org/10.1007/s11187-021-00570-w

Matrix of Self-Assertion : Aesthetic Expressions of Dalit Women Poets

- Dr. Utpal Rakshit

"All women in the world are second class citizens. For Dalit women, the problem is grave. Their Dalit identity gives them a different set of problems. They experience a total lack of social status; they are not even considered human-beings....Dalit women to put up with a triple oppression, based on class, caste, and gender. They die in order to live....." - Bama

Poetic diction encompasses the poet's deliberate selection of words and phrases to convey their thoughts and feelings to the readers. The aesthetics of women poets, hailing from the most marginalized segments of Indian society, merit particular attention. Enduring the dual burdens of caste and gender discrimination, they express their emotions through literary creations amidst enduring struggles against numerous atrocities and deprivations spanning generations. While historical records mention poets like Mollar from the thirteenth century and Soyarabai from the fourteenth century, it was the

relentless efforts of Savitribai Phule, wife of Jyotirao Phule that led to the establishment of India's first school for women's education. Following her pioneering work, Dalit women such as Hira Bansode, Dr. Jyoti Lanjewar, Urmila Pawar, and Bama emerged, along with modern writers and poets of Dalit literature like Kalyani Thakur, Sukirtharani, Swarooparani, Joopaka Subadra, Du. Saraswathi, Meena Kandasamy, and many others, each finding a unique voice within the landscape of literature.

The voice of a simple Dalit woman represents her entire community. Though their poetry may not conform to mainstream aesthetic standards, it vividly portrays their struggles with labour, assaults, deprivations, and daily challenges including natural calamities and societal disparities. Their verses juxtapose refined and colloquial language, creating a unique melody that captures the essence of their lives, distinct from those of upper-caste women. They have voiced against caste, gender, and class discriminations through poetic art. In the poem "Women of New Era" Edluri Vijaya Kumari hits at this caste-system which separated them from the rest of the country, thereby humiliating the root of origin or 'Adishakti':

It is said lying low lends grace tolerance an ornament Anusuya, Savitri, Sita icons for all women Quoting 'Manu', unquestioned men handcuffed women Imposed slavery Confining to home and hearth, Invaluable service... [Trans. T.S. Chandra Mouli]

In Kutti Revathi's translated poem "Light Is a Prowling Cat," the cat imagery symbolizes the vibrant and soft colours of life, while light is personified as emerging from darkness to witness the illuminated world. The poem showcases the poet's imaginative power and expressive prowess, rendering it inherently artistic. In the poem "Stone Goddesses," her distinct voice shines through. The piercing question she poses towards the end confronts civilization for reducing women to lifeless entities under its gaze. The profound message conveyed through skillful imagery warrants appreciation for its aesthetic depth. In Malathi Maithri's poem "Demon Language," the deliberate arrangement of words in a particular symmetry commands attention. The poet, fundamentally a feminist, explores the interconnectedness of "poetry," "demon," and "woman." She elucidates

how a woman's language is equated with the language of demons in poetry, ultimately portraying women as "wicked" beings, as "The demon's features are all/Woman..." (Trans. L. Holmstrom).

Tamil poet, Sukirtharani's poem, "Infant Language" echoes the sentiments of Virginia Woolf and Elaine Showalter, who championed the idea of women finding their own language to express themselves. They argued that women cannot truly establish their identities using the borrowed language of patriarchy; instead, they must carve out their own linguistic space to articulate their experiences and perspectives.

Meena Kandasamy in her poem "Dead Woman Walking" alludes to mythological character, Karaikkal Ammayar who stands for sexually exploited Dalit women. In the poem “A Cunning Stunt" she blazes with the inner life of womanism. In "Princess-in-Exile" she refers to the epic story of the Ramayana, particularly when Rama suspected her chastity she “walked out". Here she emphasizes on this particular episode in order to strike at patriarchy. In her poem "Becoming a Brahmin" bold and vibrant poetic fire embodies the pinnacle of aesthetic innovation, capturing the essence of true-to-life experiences. Such boldness and vitality in poetry are seldom seen, marking her work as a rare and powerful contribution to the art form.

The Bengali Dalit women's lives become life-like in the hands of poets like Smritikana Howlader, Manju Bala, Kalyani Thakur and such others. In the poem "Je Meyeti Andhaar Gone" (O Woman in the Dark), Kalyani Thakur portrays a realistic picture of a Bengali Dalit woman.

"Wonderful is the woman,
Strong and hard :
As she stands among the lamps
In infinite dark,
Wiping her sweat and poising
The ancient yoke."
(Trans. Dr. Joyjit Ghosh)

A note of Meena Kandasamy's “Mascara” somehow echoes in the poetic lines of "Dui Sakhi" (Two Friends (who are girls)) is a beautiful poem by Dalit Bengali woman poet Smritikana Howlader where in an apt story-telling fashion and unique conversational style the poet strikes on the regular incident of sexual assaults of Dalit women by upper-class males. The poem "Ar Niche Nambona" ("I Shall Not Lower Myself Anymore") by Manju Bala amplifies the

voice against upper-caste women. It unfolds as a dialogue where an upper-caste woman is confronted with a proposal for her daughter's marriage to a lower-caste boy. The upper-caste woman recoils at the idea, expressing reluctance to "stoop low," oblivious to the fact that within her own home, she experiences the oppression of being a Dalit and a victim of patriarchy.

Namasudhra! Then it is impossible
I was a Brahmin girl
Now am the wife of a Kayastho man
And shall not lower myself anymore..... (Trans. Tajuddin Ahmed)

Kalyani Thakur's poem "Lalgarh", the nine-line poem packs a punch with its vivid imagery and subtle yet biting sarcasm. This combination serves as a sharp critique of the prevailing humanism within society, eliciting a jolting response from the reader.

Maddure Nagesh Babu's "Devuni Pellam" and Vemula Yellayya's "Etti Thalli" stand as examples of early Telugu Dalit women's poetry, which, while not explicitly targeting caste- patriarchy, reflect the evolution over time. Telugu Dalit poets have increasingly spoken out against caste and gender disparities. They often critique not only Dalit men but also upper-caste women, who marginalize them within the Dalit or feminist movements, respectively. The poem, "Dalituralu" by Telegu poet Sasi Nirmala, expresses how a Dalit woman is sexually harassed by both, the upper-caste as well as Dalit males. This is observed in the following lines of the poem "Dalituralu" :

I am dragged
here and there
under someone's buttocks
a seating plank
some one or the other
drags me along
by a nose of rope
to make me dance.....
(Trans. Vasanth Kannabiran)

The poet Vijayassi in "Alisamma Shapam" utilizes the character of Soorpanakha to symbolize the entire Dalit women's community. The poem "Tandina Chetulu" by M. Gowri serves as a protest against the exploitation of Dalit women by men, reflecting on the societal injustices. This sentiment is vividly conveyed through imagery drawn from Hindu Puranas, such as Krishna's act of stealing the clothes of the 'gopikas'. Gender and caste discrimination are intricately intertwined in the experiences of Dalit women. This intersectionality is evident in poems like "Dalituralu" by

Sasi Nirmala, where voices of protest against both forms of oppression resonate simultaneously. Thus the literature of Dalit women is deeply imbued with pain and suffering. Despite being vital contributors to both the Dalit movement and feminism, they often find themselves marginalized within these movements due to the intersecting discriminations of gender and caste. This triple isolation based on caste, class, and gender underscores the unique challenges faced by Dalit women. As such, their literature necessitates a more profound and distinct observation and treatment to fully appreciate and understand their experiences.

- Dr. Utpal Rakshit
Assistant Professor
Department of English
Samuktala Sidhu Kanhu College (W.B.)
Mob: 9126767601

Works Cited

Bharati, C. B. *The Aesthetics of Dalit Literature*. Trans.Darshan Trivedi, Gujrat:Haytai, June 1999 .Print

Ghosh, Anita. 'Dalit Feminism : A Psycho-Social Analysis of Indian English Literature' in *Dalit Literature : A Critical Exploration*, Eds. Amarnath Prasad & M.B. Gaijan, p. 48.

Hawladar, Smritikana, *Barne Barne Marmakatha*. Kolkata: Janajagaran, 2015.Print

Kamala, N. (ed). *Translating Woman*. New Delhi: Zubaan,2009. Print

Kandarsamy, Meena. *Non-Conversations With A Lover*. New Delhi: Indian Literature, November 2014. Print

Priya, C. Shanmuga. 'Predicament of Dalits in the Select Poems of Meena Kandasamy'. IRS, *International Journal of Management & Social Sciences*.web. accessed on 05/08/2022

Revati, Kutti. 'Light is A Prowling Cat', 'Stone Goddesses', Home>Fiction Poetry>Seven Poems web. Accessed on 15/7/23

Sarangi, Jaydeep. *Touch by Meena Kandasamy*. Mumbai: Peacock Books, January 2011. web.accessed on 04/07/2023

Somkhwar, Pratibha. 'Dalit Women poets and New Themes in Poetry'. *International Journal of English Literature (IJEL)* 2011.web.accessed on 06/02/2023

Swarooparani, Challapalli. 'Dalit Women's Writing in Telegu'. *Round Table India*. http://roundtableindia.co.in/index.php?option=comcontext*view=arti, web. Accessed on 08/7/2016

Thakur, Kalyani. *Ashow Series*. Trans. Shisir Roy. Kolkata: Pratyush Publication, 2004 .Print

The Impact of Artificial Intelligence on the Mental Health of Secondary School Students : A Comprehensive Review

- Dr. Swati Srivastava

Abstract :

The integration of Artificial Intelligence (AI) into various sectors has been a defining feature of the 21st century, with education being no exception. As AI systems become more prevalent in secondary schools,it is crucial to understand their impact on the mental health of students. This research article provides a comprehensive analysis that delves into the intricate relationship between artificial intelligence (AI) and the mental well-being of adolescents during their formative years. Through a comprehensive review of existing literature, this paper analyzes the multifaceted impacts of AI on the mental health of secondary school students, highlighting key findings, challenges, and recommendations for future research and practice.

Keywords : Artificial Intelligence, Mental Health, Secondary School Students, Education, Technology

1. Introduction :

In the realm of education, the advent of Artificial Intelligence (AI) has initiated a transformative shift, particularly in secondary schools where it has begun to significantly influence teaching methodologies and student learning experiences. The prevalence of artificial intelligence (AI) in education is on the rise, promising innovative solutions to enhance learning outcomes and student experiences. However, as AI becomes increasingly embedded in educational environments, concerns regarding its impact on the mental health and well-being of secondary school students have emerged. This paper aims to explore the complex interplay between AI technologies and mental health outcomes among adolescents, providing insights into potential benefits, challenges, and implications for educators, policymakers, and mental health professionals.

2. AI in Secondary Education: A Double-Edged Sword

AI's role in education extends beyond academic learning; it also affects students mental health. On one hand, AI can serve as a supportive tool, offering personalized learning experiences that reduce stress and anxiety associated with academic pressure. On the other hand, the constant interaction with AI systems may lead to a decrease in human contact, potentially impacting students' social skills and emotional development.

3. The Role of AI in Education :

Before delving into the specific effects on mental health, it is essential to understand the diverse applications of AI in secondary education. AI-driven systems, such as intelligent tutoring systems, adaptive learning platforms, and chatbots, offer personalized learning experiences, timely feedback, and educational support tailored to individual student needs. Additionally, AI-powered tools are increasingly utilized for assessing students cognitive abilities, identifying learning gaps, and providing targeted interventions.

4. Educational Advancement through AI

AI's integration into the educational sector promises a revolutionized learning environment. With tools like adaptive learning

platforms and AI-powered tutoring systems, students receive a more personalized education. AI technologies can tailor learning experiences to individual needs, thereby enhancing engagement and academic performance.[1] For instance, AI systems can provide real-time feedback, allowing students to understand their learning progress and areas needing improvement.

5. Positive Impacts of AI on Mental Health :

AI-based interventions hold promise for promoting positive mental health outcomes among secondary school students. Personalized learning platforms can adapt instructional content to students cognitive strengths and weaknesses, fostering engagement, motivation, and academic self-efficacy. Moreover, AI-driven mental health support tools offer accessible resources for students experiencing psychological distress, including anxiety, depression, and stress. Virtual counselors and chatbots provide confidential and non-judgmental support, reducing barriers to seeking help and promoting early intervention.

6. Enhancing Mental Health Services through AI

AI has the potential to revolutionize mental health services in schools. By monitoring students online behavior and learning patterns, AI can identify those at risk of mental health issues and provide **earlyintervention'.**[1] Further more, AI-powered chatbots and virtual counselors can offer immediate support for students experiencing stress, anxiety, or depression, making mental health resources more accessible.

7. Challenges and Risks:

Despite the potential benefits, the integration of AI in education poses several challenges and risks to students mental health. Over reliance on AI-driven learning systems may exacerbate feelings of isolation, disengagement, and dependency among students, diminishing the importance of interpersonal relationships and human interactions in the learning process. Moreover, concerns regarding data privacy, algorithmic bias, and ethical implications of AI technologies raise critical questions about their impact on students autonomy, agency, and well- being.

8. Conclusion :

In conclusion, the integration of artificial intelligence into secondary education has profound implications for students' mental health and well-being. While AI technologies offer innovative solutions to enhance learning experiences and support mental health, careful consideration of potential risks and ethical concerns is essential. By fostering a balanced approach that prioritizes human-centered design, ethical principles, and holistic well-being, educators and stakeholders can harness the transformative potential of AI while safeguarding the mental health of secondary school students..

- Dr. Swati Srivastava
Principal
Sandipani Academy, Achhoti,Durg
Mob. 7987078356

References :

Ahmad, K., Qadir, J., Al-Fuqaha, A. Iqbal, W. El-Hassan, A. Benhaddou, D.,& Ayyash, M. (2020). Data-driven artificial intelligence in education: A comprehensive review.

R. (2022). Artificial intelligence enabled personalised assistive tools to enhance education of children with neuro developmental disorders-a review InternationalJournalofEnvironmental Research and Public Health, 19(3), 1192.

Chen, L., Chen,P.,&Lin,Z.(2020). Artificial intelligence in education: Areview.IeeeAccess,8, 75264-75278.

।। बाबा के अनुयायी जन।।

- एड. गुरुप्रसाद मदन

बाबा के अनुयायी जन तुम अपने करम निहारो।
बाबा के ग्रंथ निथारों।
फिर अपनी और निहारो।

दी कुरबानी जन-जन हित में -
हर पल हर क्षण बहुजन हित में।
जॉत-पॉत न पंथ भेद था -
मानव उसका केन्द्र बिन्दु था
इतना छोटा कद मत करदो, बाबा के ग्रंथ निथारो।
तुम अपने करम निहारो।
फिर अपनी ओर निहारो।

एक हाथ में जय जय-भीम
लोकतंत्र की करते मीच
उलटी धार बहा के रख दी
मानवता की ग्रीवा घोट दी
शरम करो जो तुमने कर दी- अपने पंथ निहारों
तुम अपने करम निहारो।
फिर अपनी ओर निहारो।

लोकतंत्र की धज्जी धज्जी,
एक तंत्र की बना के भज्जी
परचम जय जय भीम का कहते
पर कदम तुम्हारे बहके बहके
खुली आँख जग देख रहा, तुम क्यों कर नहीं निहारो।
बाबा के ग्रंथ निथारों ।
फिर अपने करम निहारो।

संविधान का एक प्रियंबल
बाबा के मन का गान सुनो
सब स्वतंत्र हो सब समान हो
सबमें भाईचारा होवे,
बात न्याय की बाबा कहते है, उनका पंथ निहारों
बाबा के ग्रंथ निथारों ।
फिर अपनी ओर निहारो।

डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमीजी के 81 वें जन्म दिवस (30.04.1944) पर
आश्वस्त परिवार का भावभीना स्मरण....

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स , 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार